सामुदायिक निगरानी ने बढ़ाया शौचालयों का उपयोग

जिला बैतूल जो कि मध्यप्रदेष का आदिवासी बाहुल्य जिला है इस जिले के दक्षिणी छोर पर मुलताई विकासखण्ड का एक गाँव है चौथिया जिसमें कुल 238 परिवार है। अन्य गाँवों की तरह इस गाँव के ज्यादातर परिवार खुले में शौच करते थे। गावं के परिवारों ने गांव में पंचायत और स्वंय के द्वारा शौचालय तो बना लिये थे लेकिन इसके उपयोग में लोगों की दिलचस्पी बहुत कम थी।

राज्य में षौचालयों के उपयोग को बड़ाने के लिए 'स्वच्छता कार्यक्रम' में समुदाय के नेतृत्व विकास एवं समुदायिक स्वामित्व के भाव का विकास करने के उद्देष्य से सरकार द्वारा विकासखण्ड स्तर पर समुदाय प्रेरिकरण विधाओं में प्रशिक्षित प्रेरकों के दल का निर्माण कर ग्रामों में समुदाय आधारित स्वच्छता पद्धतियों से क्रियान्वयन हेतु रणनीति बनाकर काम करने हेतु बैतूल जिले को कार्य हेतु चुना गया है।

शौचालय निर्माण और उसके उपयोग में ग्रामीण समुदाय में नेतृत्व और जबावदेही निर्वाह करने हेतु प्रेरित करने के लिए युनिसेफ के सहयोग प्रत्येक विकासखण्ड से 3–4 इच्छुक व्यक्तियों का जिला स्तर पर चयन कर समुदाय अभिप्रेरण पद्धतियों द्वारा राज्य स्तर पर 5 दिवसीय प्रषिक्षण दिया गया। इसी प्रषिक्षण में प्रषिक्षक श्री कचरू बारंगें ने चौथिया ग्राम के ग्रामवासियों को खुले में शौच करने की प्रवृत्ति को शर्म एवं घृणा के विचारों से ट्रिगर किया। यह कार्य आसान नहीं था। उन्होंने अपनी

एक टोली बनाकर मोहल्लों में जा–जाकर पुरूषों, महिलाओं व बच्चों को शौच स्थान पर ले जाकर समझाया कि कैसे बाहर किया गया शौच हमारे शरीर को नुकसान पहुचाता है और कैसे अनजाने ही हम एक दूसरे का मल खा रहे हैं। उन्होंने अपने ब्लॉक की ही एक महिला अनिता नारे का उदाहरण दिया, कि कैसे

उन्होंने बाहर खुले में शौच जाने को लेकर मना किया और अपने घर को छोड़ पति को शौचालय निर्माण हेतु विवष कर देष में ख्याति प्राप्त की। इस प्रकार के उदाहरणों से श्री कचरू और उनकी टीम ने लोगों को ना केवल यह समझाया कि हमें स्वयं के साधनों और स्वच्छ–भारत मिषन की सहायता राषि से शौचालय बनाना चाहिए बल्कि यह समझाने में भी कामयाब हुए कि खुले में शौच एक सामूहिक समस्या है और सामूहिक प्रयास और निगरानी से ही गाँव मलजनित बीमारी से मुक्त हो सकता है।

इस प्रयास से गाँव में महिलाओं और पुरूषों के दो निगरानी दल बन गए। पुरूष दल का नेतृत्व मंचितलात, धनराज, रमेष, सुमरन, संतोष, कमलेष, गुरू कर रहे थे जबकि महिला दल में राधा, सयाबाई, रुकमणि, वेदि, बेबी, अंजु, ललिता, गायत्री और रामप्यारी शामिल थीं। ये सब शौच के समय बाहर जाने वालों को शौचालय बनाने और जिनके पास शौचालय है उसका उपयोग करने हेतु विनती करने लगे। गाँव की सरपंच भी इसमें शामिल हुई, जब गावं के परिवारों में माँग बढ़ी तो उन्होंने सरकारी मदद् से शौचालय बनवाना शुरू किया। इस बीच जो बाहर जा रहे थे उनके शौच पर यही दल मिट्टी डालकर ढकने लगा, दल के इस प्रयास से वह लोग षर्मिदगी महसूस करने लगे और सार्वजनिक रूप से आगे आये और जल्द से जल्द घर में षौचालय बनाने का विष्वास दिलाया। इसका असर यह हुआ कि गांव में करीब डेढ़ महीने में सभी के यहाँ शौचालय बन गए।

इतने प्रयासों के बावजूद कुछ लोग ऐसे थे जो बाहर खुले में शौच जाना बंद नहीं कर रहे थे। तब ग्राम पंचायत में सरपंच की अध्यक्षता में बैठक हुई जिसमें निर्णय हुआ कि गाँव में लाउड स्पीकर से उनके नाम को उद्घोषित किया जाए। इसके लिए एनाउन्सर को सूचना मोबाईल से दी जाती है तब एनाउन्सर अनाउन्स करना शुरू कर देता है। इस प्रक्रिया में यह समझाया जाता कि शौचालय होने पर भी शौच के लिए बाहर जाना नहीं चाहिए। नाम एनाउन्स होने की बदनामी ने ऐसे लोगों के भी शौचालय में जाने पर मजबूर कर दिया जो शौचालय में जाना या शौचालय का उपयोग करना पसन्द नहीं करते थे।

नाम सार्वजनिक होने के बाद खुले में शौच जाने से कतराने लगे लोग

प्रेरकों के दल और निगरानी समिति के इन प्रयासों को प्रषासन ने सराहा और शासकीय धन को पंचायत को उपलब्ध कराकर मदद की, साथ में शौचालय निर्माण की सामग्री तथा राजमिस्त्री उपलब्ध करवाकर शौचालय बनवाने एवं सवेरे की निगरानी में शामिल होकर उनके होसले को बढ़ाने तथा उनकी गतिविधियों को वैद्यता प्रदान करने में

मदद की। इस तरह अल्पावधि में यह गांव खुले में शौच मुक्त ग्राम बन गया। कचरू बारंगें और उनके साथियों का दल स्वच्छता दूत के रूप में उभरे हैं जो स्वच्छता में समुदाय की भूमिका की ना केवल समझ रखते हैं बल्कि उन्होंने इसे जमीन पर क्रियान्वित कर यह आषा जगाई है कि सरकारी प्रयासों से कचरन जैसे ग्रामीण स्वयं सेवकों को जोड़कर स्वच्छ–भारत अभियान को जन आन्दोलन बनाया जा सकता है।

चौथिया गांव की इस सफलता और प्रक्रियाओं में जिले के कलेक्टर श्री ज्ञानेष्वर पाटिल गहरी दिलचस्पी लेते हुए इन प्रक्रियाओं को पूरे जिले में सुनियोजित रूप से फैला रहे हैं। वे ना केवल ग्रामीण प्रेरकों से सीधे बात कर उन्हें प्रोत्साहित करते रहते हैं बल्कि सार्वजनिक समारोहों में इन्हें पुरस्कृत भी करते रहते हैं। इसके अतिरिक्त अभियान से मिलने वाली धन राषि पंचायतों को शीघ्रता से उपलब्ध हो, हितग्राहियों के लिए ग्राम पंचायतें गुणवत्तापूर्ण सामग्री खरीदें और प्रषिक्षित राजमिस्त्रियों से बेहतर शौचालय का निर्माण हो इसके लिए ब्लॉक अधिकारियों, स्वच्छता समन्वयकों तथा तकनीकि अधिकारियों के दायित्वों का निर्धारण कर क्रियान्वयन की समीक्षा करते हैं।

इन सफलताओं में स्थानीय संस्थाओं का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा जिसमें मध्यान्ह भोजन की महिला स्वसहायता समूह और जन अभियान परिषद के ग्रामीण प्रस्फुटन समितियों का। इसके सदस्यों ने सुबह शाम निगरानी दल के साथ मिलकर बाहर शौच जाने वालों को रोकने में और शौचालय निर्माण हेतु प्रेरित करने में प्रमुख भूमिका का निर्वाह किया।

चौथिया गांव में मिली सफलता और अनुभवों के आधार पर बैतूल जिले के मुलताई ब्लॉक की 12 ग्राम पंचायतों में इसी विधि से व्यक्तिगत शौचालय निर्माण और शौचालय उपयोग का अभियान चलाया जा रहा है। और आषा है कि अगले 2–3 महीनों में ये सभी ग्राम पंचायतें खुले में शौच मुक्त हो जाएगी। इस गतिविधि से प्राप्त सीख और दृढ़–निष्चयी स्वच्छता दूतों का प्रेरक दल के रूप में उपयोग कर सम्पूर्ण बैतूल जिले को खुले में शौच मुक्त बनाने का लक्ष्य पूरा हो सकता है।

जिला बैतुल कुशल प्रेरकों के सहयोग, समुदाय की भागीदारी एवं प्रशासन के कुशल नेतृत्व में सम्पूर्ण स्वच्छता की और धीरे–धीरे किन्तु ठोस कदम बढ़ा रहें हैं।

****

स्त्रोत : एम पी वॉश, वाटर एड